How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

ऊधमसिंहनगर जनपद के बुक्सा अनुसूचित जनजाति (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह) के समीपवर्ती समाजों से सम्बन्धों का मूल्याँकन

डा. श्याम सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग, हिन्दू कालेज, मुरादाबाद

सार

विभिन्न मानवषास्त्रीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक आधारों पर भारत के अनुसूचित जनजातीय समूहों में से 75 समूहों को उनकी विषिष्ट दषाओं के कारण भारत सरकार ने उन्हें विषेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG- Particularly Vulenerable Tribal Group) या विषेष रूप से कमजोर वर्ग में सम्मिलित किया है। प्रस्तुत षोध पत्र भारत के ऐसे जनजातीय मानव समूहों में से एक बुक्सा अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित है जो कि देष के सबसे गरीब व आधुनिक विकास से वंचित या उससे दुष्प्रभावित जनजातीय समूहों में से एक है। बुक्सा अनुसूचित जनजातीय समूह विगत लगभग 700 वर्षों से भारत के अगम्य/दुर्गम, दलदली व घने वनों वाले क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के दक्षिणी भाग में हिमालय पर्वतों के पदीय प्रदेष के ऊधमसिंहनगर कह तराई नामक संकीर्ण पट्टी सहित नैनीताल, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार तथा देहरादून जनपदों में निवास कर रहे हैं।

महत्वपूर्ण शब्दावली

आदिम	पूर्वज	हस्तकला	पलायन	घनघोर	खानाबदोष
बंजारे	दस्तकार	बुक्साड़	काष्ठ	उर्वराषक्ति	पीपलीवन
पीपलपड़ाव	मूलदेष	पुरोहित	मात्रभूमि	षहीद	रूपान्तरित
षरणार्थी	जलाषय	कोठार	अधोभूजलस्तर		

बुक्सा अनुसूचित जनजाति की उत्पत्ति व परिचय

ऐसा माना जाता है कि आज से लगभग 700 वर्ष पूर्व अपने वर्तमान निवास स्थान पर पहुँचने के पूर्व इनके पूर्वज उस समय के प्रमुख राजनीतिक क्षेत्र राजस्थान व मध्य प्रदेष क सीमावर्ती क्षेत्रों में निवास करते थे। तेरहवीं षताब्दी के अन्त और चौदहवीं षताब्दी के प्रारम्भ में भारत के प्रसिद्ध राजपूताना क्षेत्रों में मुस्लिम धर्म के अनुयायी विदेषियों के आक्रमण और उनके बलपूर्वक धर्म परिवर्तन के व्यापक अभियान से त्रस्त होकर वहाँ के कुछ निवासी सुरक्षित स्थानों की तलाष में वहाँ से पलायन करने को विवष हुए। उन्हीं में से कुछ मानव समूह उत्तर–पूर्व की दिषा में आगे बढ़ते हुए कई पीढ़ियों बाद हिमालय पर्वत के पदीय प्रदेष में स्थित घने वनों के तराई क्षेत्र में पहुँचे। युद्ध व आक्रमण जनित बाध्यकारी पलायन के मारे इन लोगों के पूर्वज विभिन्न हस्तकलाओं में काफी निपुण थे। इसलिए अलग–अलग क्षेत्रों में पहुँचकर इन लोगों ने अपने परिवारों और समाजों को पुनःस्थापित किया और विदेषी आक्रमणकारियों से सुरक्षित इन क्षेत्रों में निवास प्रारम्भ कर दिया।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,*14*(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

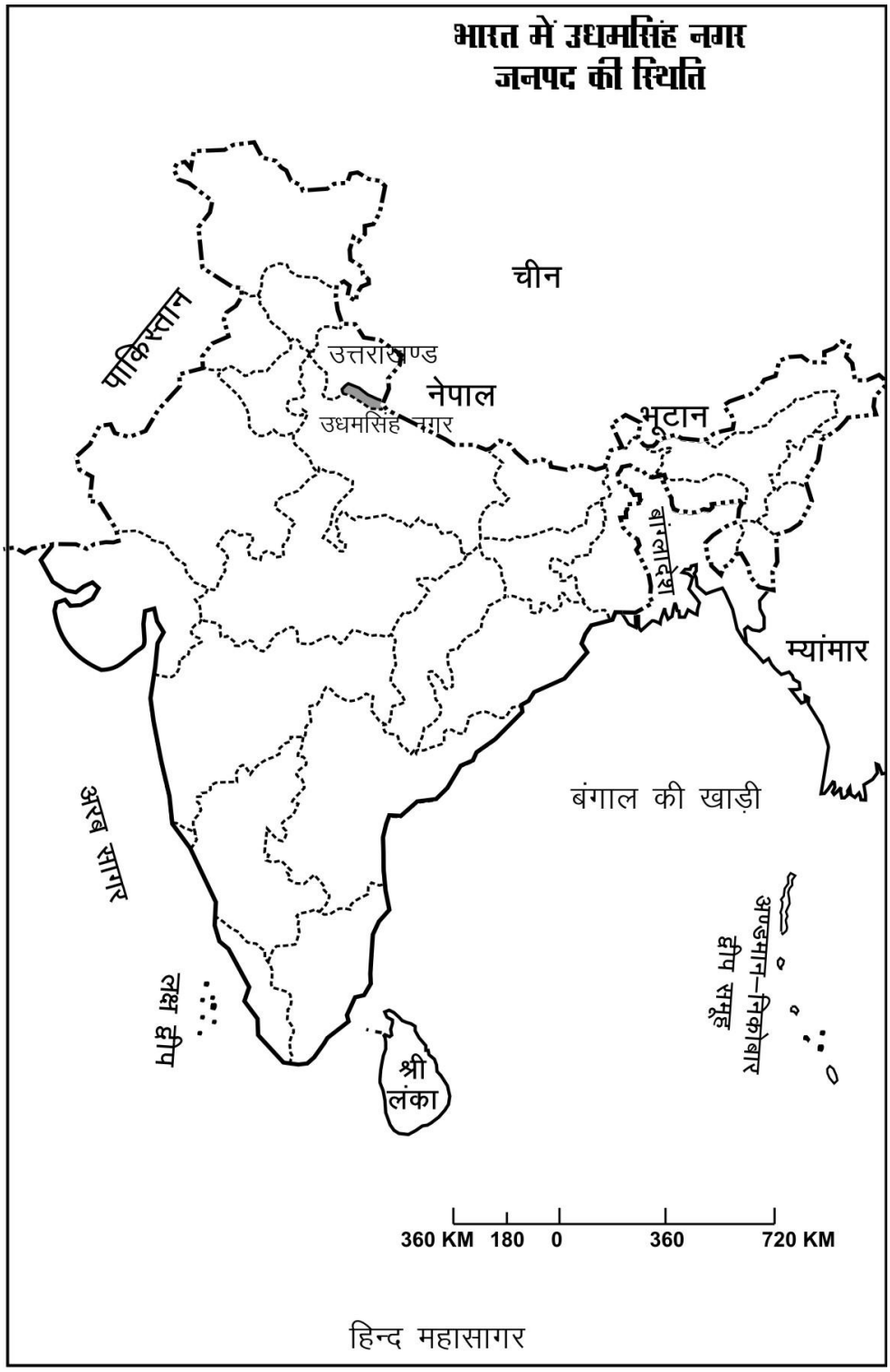

मानचित्र संख्या– 01

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,*14*(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

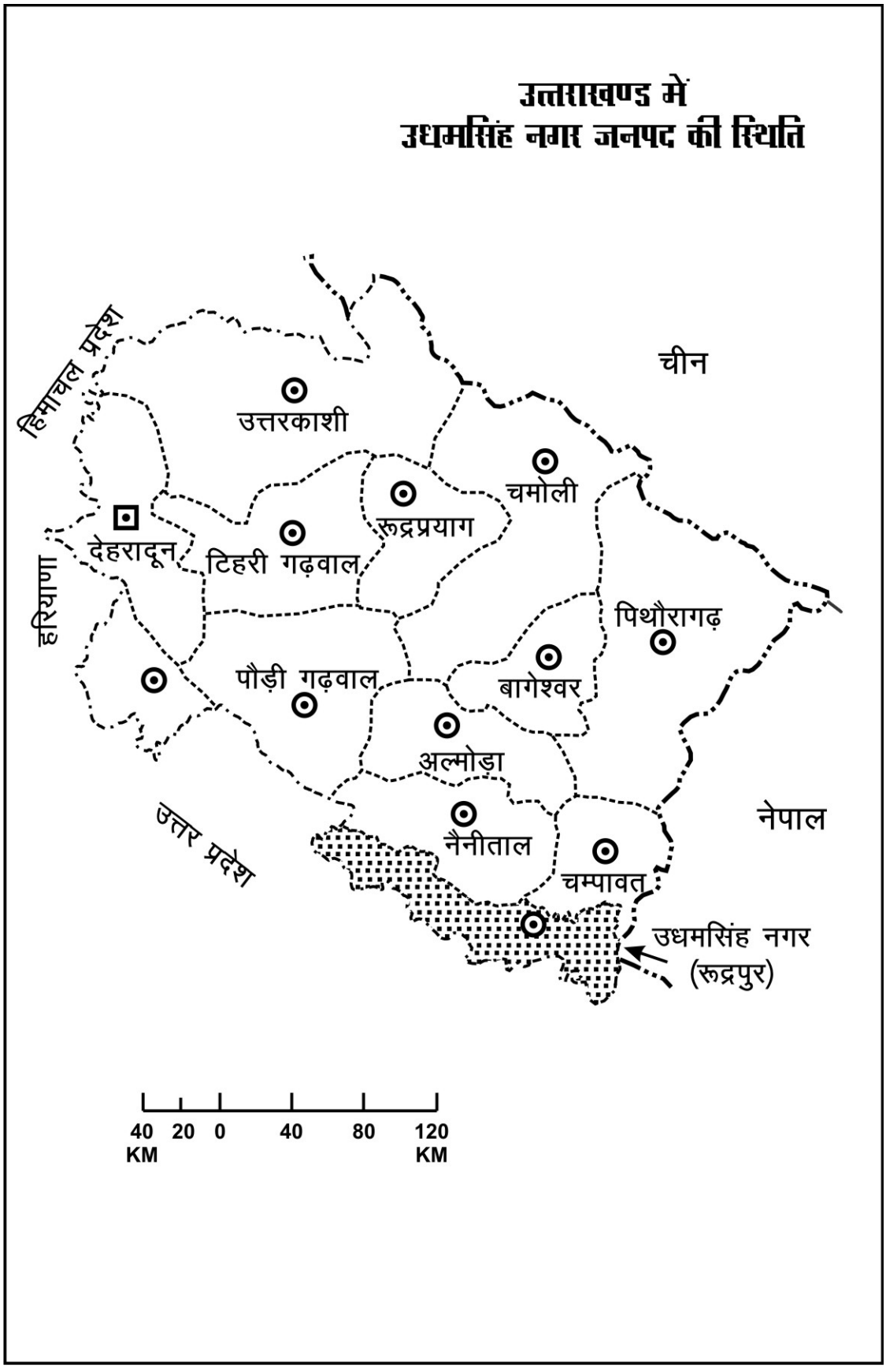

मानचित्र संख्या– 02

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

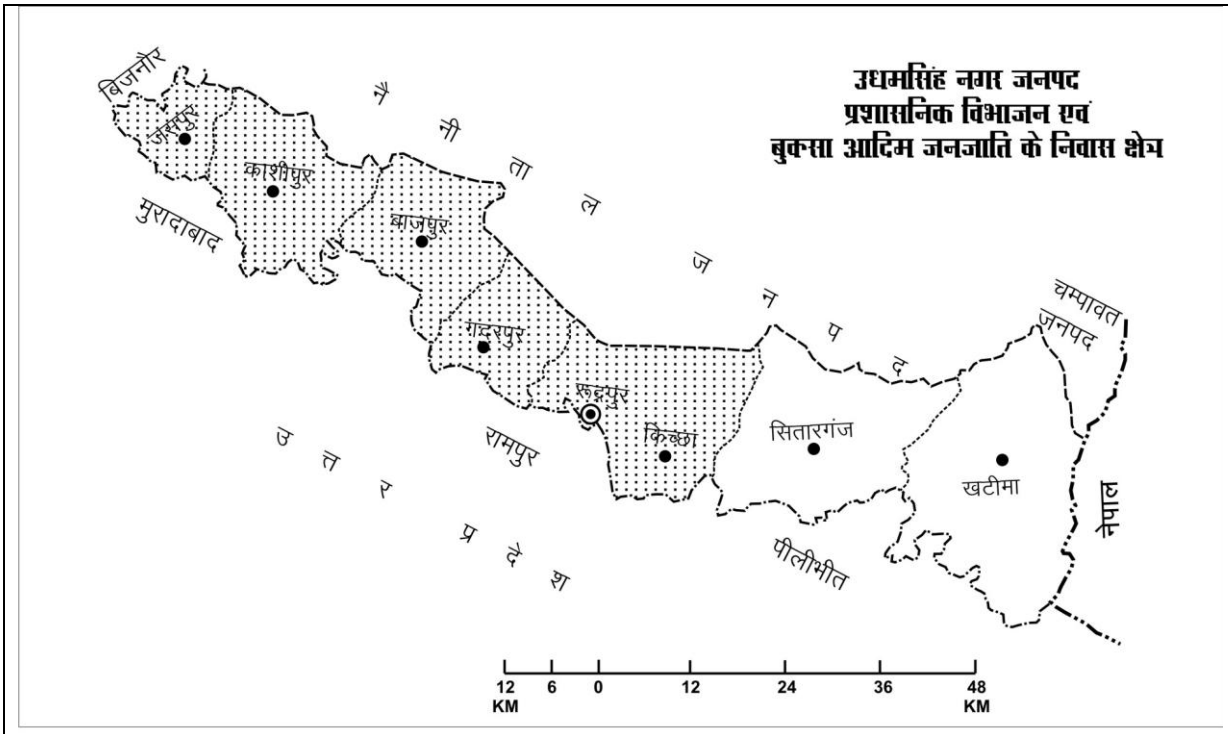

मानचित्र सं. 3

1967 ई. में बुक्सा लोगों को अनुसूचित जनजाति और 1980 ई0 में देष की 75 अति गरीब व पिछड़ी जनजातियों के साथ बुक्सा जनजाति आदिम जनजाति समूह में षामिल कर लिया गया। पुनः 2008 में इन 75 अति पिछड़ी व गरीब जनजातियों का वर्ग बदलकर विषेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG- Particularly Vulenerable Tribal Group) कर दिया गया। बुक्सा अनुसूचित/आदिम जनजाति/विषेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह वर्तमान समय में उत्तर प्रदेष तथा उत्तराखण्ड दोनों राज्यों में निवास कर रही है।

सारणी सं.: 1 बुक्सा आदिम जनजाति का निवास क्षेत्र एवं जनसंख्या 2011
(जनपद ऊधमसिंहनगर, उत्तराखण्ड)

क्रम	तहसील/विकास खण्ड	बुक्सा ग्रामों की संख्या	परिवारों की संख्या	बुक्सा जनसंख्या		
				कुल	पुरूष	महिला
1	गदरपुर	54	2,843	12,649	6,359	6,290
2	बाजपुर	56	2,247	11,064	5,387	5,677
3	काषीपुर	3	74	305	144	161
योग		113	5,164	24,018	11,890	12,128

स्रेतः स्वयं क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाएं।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में बुक्सा आदिम जनजाति समूह की कुल जनसंख्या 51,138 थी जिसमें से उत्तर प्रदेष के बिजनौर जनपद में (4367), तथा षेष (46,771) उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून, हरिद्वार, पौड़ी गढ़वाल, नैनीताल तथा ऊधमसिंहनगर जनपद में निवास करते हैं। सारणी सं. 01 के अनुसार 2011 में बुक्सा आदिम जनजाति समूह की कुल जनसंख्या लगभग 60,000 है। इस षोध पत्र के लिए चयनित क्षेत्र में बुक्सा आदिम जनजाति समूह की लगभग 25,000 जनसंख्या निवास करती है।

आप्रवासी एवं बुक्सा आदिम जनजाति सम्बन्धों का विश्लेषण।

बुक्सा जनजाति के लोगों का ऐसा विष्वास है कि गदरपुर, बाजपुर और काषीपुर तहसील व विकासखण्डों, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार व देहरादून जनपदों और उत्तर प्रदेष के बिजनौर जनपद के निवासी बुक्सा जनजाति के पूर्वज लोग आज से लगभग 700 वर्ष पूर्व वर्तमान राजस्थान–मध्य प्रदेष में विस्तृत राजपूताना क्षेत्र से पलायन करके यहाँ पहुँचे थे। बुक्सा आदिम जनजाति से पूर्व तराई के इस घनघोर जंगली क्षेत्र में माझी, वनगूजर, मछुआरे, धीमर आदि खानाबदोष लोग कुछ स्थानों पर अपनी अस्थायी झोंपड़िया व डेरे बनाकर रहते थे। कालान्तर में धर्मान्तरण करके मुसलमान बने बंजारे आदि लोग बुक्सा लोगों के साथ यहाँ आकर बस गए। इसके बाद कुमाऊँ क्षेत्र के राजाओं ने पर्वतीय क्षेत्र के बाहर एतिहासिक व पुरातात्विक महत्व के स्थानों पर अपनी सुरक्षा चौकियां– काषीपुर, रूद्रपुर, किच्छा आदि बसायीं और यहाँ पर पर्वतीय समूह आकर बस गए। भारत में अंग्रेजों के आगमन और उनके साम्राज्य विस्तार के साथ ही यहाँ पर सड़क व रेलमार्ग के विकास के साथ–साथ गदरपुर, गूलरभोज, सुल्तानपुर पट्टी, दिनेषपुर आदि कस्बों की नींव पड़ी। भारत–पाक–बांग्लादेष विभाजन से पूर्व तक बुक्सा आदिम जनजाति समूहों द्वारा आवासित क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ पर्वतीय समूहों और मुसलमानों ने अपने–अपने गाँव बसा लिए थे। कस्बों व नगरीय क्षेत्रों में बनियों, व्यापारियों जो कि हिन्दू व मुसलमान दोनों समुदायों से थे के साथ–साथ कुछ परम्परागत कारीगरों व दस्तकारों– बढ़ई, लुहार, भुर्जी, वाल्मिकी, नाई, पुरोहित, षिल्पकार, ठठेरे, बुनकर, धुना, सुनार, बंजारे, दर्जी, हलवाई, कसाई, चर्मकार आदि भी बस गए थे। इस समय तक इस क्षेत्र के सभी निवासियों ने मिलकर एक सुदृंढ़ सामाजिकार्थिक–व्यापारिक– प्रषासनिक व्यवस्था को स्थापित कर लिया था। बुजुर्ग लोग बताते हैं कि नमक और वस्त्र को छोड़कर तत्कालीन दषाओं के अनुसार भोजन, वस्त्र, आवास, परिवहन, दवाई आदि से लेकर जीवन से जुड़ी आवष्यकता की प्रत्येक वस्तु, उपरोक्त सभी वर्गों के लोग स्थानीय रूप से जुटा लेते थे। परिस्थितियों के अनुसार साप्ताहिक बाजार स्थलों, मेला स्थलों आदि में अपनी–अपनी वस्तुओं को लेकर व्यापारी लोग पहुँच जाते थे और क्षेत्र के निवासी उपभोक्ता वहाँ पर पहुँच कर बड़े ही हर्सोल्लास के साथ अपनी आव"यकता की वस्तु खरीद लिया करते थे। कालान्तर में कुछ स्थान वस्तु विषेष के स्थायी बाजारों के रूप में स्थापित हो गए, जैसे– काषीपुर वर्तनों व वस्त्रों के लिए, रामनगर– मिर्च मषालों व काष्ठ के बने सामानों के लिए, आदि। इसी प्रकार गदरपुर (रविवार व बुधवार), दिनेषपुर

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

(षनिवार), गूलरभोज (वृहस्पतिवार), केलाखेड़ा (षुक्रवार), बाजपुर (सोमवार), सुल्तानपुर पट्टी (बुधवार), काषीपुर (मंगलवार) आदि में लगने वाले साप्ताहिक बाजार सैंकड़ों वर्षों से क्षेत्र के निवासियों को व्यापारिक केन्द्र की सुविधाएं प्रदान कर रहे हैं।

1947 ई. में भारत की अंग्रेजों से स्वाधीनता और भारत–पाक–बांग्लादेष विभाजन के पूर्व तक बुक्सा लोग इस क्षेत्र के प्रमुख निवासी थे। इसीलिए काषीपुर से लेकर रूद्रपुर–सितारगंज तक विस्तृत क्षेत्र को सामान्यतया **''बुक्साड़ या बुक्सार क्षेत्र''** के नाम से जाना जाता था। घने वन, दलदल व दुर्गम क्षेत्र होने के कारण बुक्सा आदिम जनजाति के लोग षिक्षा व साधनों की कमी, चलवासी जीवन प्रणाली के कारण लगभग खानाबदोष समूहों का जीवन व्यतीत करते थे। झूमिंग खेती, पषुपालन, वन्य जीवों का षिकार करना, नदियों व प्राकृतिक जलाषयों, गराड़ों से मछलियां पकड़ना बुक्सा जाति के लोगों का प्रमुख पेषा था। जनजातीय जीवन षैली, आधुनिक संसाधनों की कमी, षिक्षा–तकनीक–ज्ञान–विज्ञान आदि का अभाव और विकास की भावना की कमी के कारण बुक्सा आदिम जनजाति के लोग अपने परिवारों, पषुओं व नाम मात्र के घरेलू सामान के साथ सुविधाजनक व उपजाऊ तथा सुरक्षित क्षेत्रों में प्रायः पलायन/ प्रवास करते रहते थे। इस समय तक बुक्सा आदिम जनजाति द्वारा आवासित पूरे बुक्साड़ क्षेत्र की जनसंख्या कुछेक हजार मात्र थी। ऐसे में जनाभाव के कारण सर्वत्र क्षेत्र खुला व वनावरण युक्त था। तकनीक का हाल यह था कि आज से लगभग 40–45 वर्ष पूर्व तक लोहे के हल लोगों के पास नहीं थे। तब तक लोग काष्ठ के बने हल व काष्ठ से ही बने अन्य यन्त्रों व उपकरणों का ही प्रयोग करते थे। आवागमन के लिए काष्ठ के पहियों वाली बैलगाड़ी व घोड़ागाड़ी का ही उपयोग किया जाता था। चलवासी जीवन का प्रतीक इनके परित्यक्त गाँवों के अवषेष पीपली वन, रामनगर के पौलगढ़, वरूआवाला, गुलजारपुर, छोई, पीपलपड़ाव, दिनेषपुर, रामबाग, उलैहतापुर, मटकोटा (रूद्रपुर के पास) मोतियापुर, फतेहगंज, गदरपुर गाँव, नारायणपुर दोहरिया, पड़किया, विक्रमपर, फरीदपुर आदि में मिलते हैं जहाँ पर अब आप्रवासी लोग आकर बस गए हैं।

तराई के गैर आवासित खुले क्षेत्र व उसकी उर्वराषक्ति से भरपूर उपजाऊ मिट्टी, सघन वनावरण व सम्पन्न जीव संपदा की ओर आकर्षित होकर कालान्तर में कम्बोज, मुस्लिम, रायसिख, मुल्तानी व पर्वतीय लोग भी कुछ संख्या में छोटे–छोटे गाँव बसाकर इस क्षेत्र में बस गए। वर्तमान समय में बुक्सा आदिम जनजाति के लोगों को छोड़कर यहाँ के अधिसंख्य निवासियों के पूर्वज या वंषज इस क्षेत्र से बाहर निवास करते हैं जिनसे इन लोगों का रिष्ता–नाता व आना–जाना आज भी अनवरत रूप से जारी है। इसके विपरीत कई षताब्दियां व 35 से अधिक पीढ़ियां गुजर जाने के कारण बुक्सा लोगों का समस्त समाज इसी क्षेत्र के लगभग 150 गाँवों में निवास करने वाले लोगों तक ही सीमित है। इनमें से अधिकांष लोग अपने पूर्वजों की 5–6 से अधिक पुरानी पीढ़ियों के लागों के नाम–पते तक नहीं जानते हैं। आज भी सिख समुदाय पंजाब, पूर्वांचल के लोग गोरखपुर, देवरिया व अन्य जिलों, बंगाली लोग बंगाल व बांग्लादेष और पर्वतीय लोग पर्वतीय क्षेत्रों को अपना मूल देष या अंचल मानकर अपने वंषजों

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

के यहाँ भली प्रकार आना–जाना करते ह। इसके विपरीत बुक्सा आदिम जनजाति के प्रत्येक सदस्य के सभी वंषज–पूर्वज गदरपुर, बाजपुर, काषीपुर या निकटवती नैनीताल जिले के रामनगर विकासखण्ड में ही निवास करते हैं। यद्यपि बुक्सा आदिम जनजाति समूह के कुछ लोग पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार, देहरादून जिलों तथा निकटवर्ती उत्तर प्रदेष के बिजनौर जनपद में भी निवास करते हैं किन्तु उन बुक्सा लोगों से अध्ययन क्षेत्र के बुक्सा लोगों का रिष्तागत या वैवाहिक या व्यावसायिक किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस क्षेत्र के बुक्सा जनजाति के लोग अपनी 5–6 पीढ़ी से पुरानी पीढ़ी के वंषजों के नाम–पते गोत्र व निवास स्थान को जानने के लिए परम्परागत पुरोहितों, गुरूओं, हरिद्वार के पण्डितों आदि द्वारा तैयार दस्तावेजों पर निर्भर हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि बुक्सा लोगों की वंषावली का संग्रह लिखित रूप में नहीं मिलता है।

बुक्सा आदिम जनजाति के लोगों क बाद इस क्षेत्र में आकर बसने वाले लोगों को हम निम्न वर्गों में रख सकते हैं–

1. ऐतिहासिक कालीन प्रवासी।
2. स्वतंत्रतापूर्व कालीन प्रवासी।
3. स्वतन्त्रोत्तर कालीन प्रवासी और
4. वर्तमान कालीन प्रवासी।

1. **ऐतिहासिक कालीन आप्रवासी** – इस वर्ग में अध्ययन क्षेत्र में बुक्सा जनजाति के साथ रहने वाले उन लोगों व जातियों को षामिल कर सकते हैं जो कि या तो बुक्सा लोगों के यहाँ पहुँचने के पूर्व रह रहे थे या फिर उनके साथ ही यहाँ आकर बस गए थे। इनमें कुछ पर्वतीय जातियां और कुछ मुस्लिम जातियां, कुछ विषेष कार्य करने वाले दस्तकार–षिल्पकार आदि जैसे– बढ़ई, लुहार, सुनार, नाई, वाल्मिकी, वनगूजर, गरड़िया, माझी, मछुआरे, धुना, भुर्जी, कहार, बंजारे व कुछ अन्य खानाबदोष जातियां व समूह आदि सम्मिलित हैं। ये लोग 19वीं षताब्दी के अन्त व 20वीं षताब्दी के प्रारम्भ तक इस क्षेत्र में विभिन्न कारणों से यहाँ आकर बस गए थे।
2. **स्वतन्त्रता पूर्वकालीन आप्रवासी** – इस वर्ग के अन्तर्गत उन लोगों को षामिल किया जाता है जो कि 20वीं षताब्दी में भारत की स्वतन्त्रतापूर्व की अवधि में यहाँ आकर बस गए थे। इस अवधि में कुछ पर्वतीय जातियां व समूह, निकटवर्ती उत्तर प्रदेष राज्य के रामपुर, बरेली, बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ आदि जनपदों और हरियाणा राज्य के कुछ लोग यहाँ के गाँवों व नगरों–कस्बों में आकर बसते रहे हैं।
3. **स्वतन्त्रोत्तर कालीन आप्रवासी** – इस वर्ग के लोग ही वास्तविक आप्रवासियों की श्रेणी में आते हैं। सैंकड़ों वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद भारत को प्राप्त स्वाधीनता की कीमत जिस प्रकार से पाकिस्तान व बांग्लादेष में निवास करने वाले हिन्दुओं व गैर–मुस्लिम लोगों को अपनी

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

मात्रभूमि से पलायित होकर षरणार्थी बनने के रूप में चुकानी पड़ी उसी प्रकार स्वाधीनता संघर्ष व तत्कालीन राजनीतिक हलचलों से अलग व अनजान रहने वाले इस दुर्गम वन क्षेत्र के प्राचीन निवासियों बुक्सा आदिम जनजाति लोगों को भी चुकानी पड़ी। करोड़ों की संख्या में पाकिस्तान व बांग्लादेष (पूर्वी पाकिस्तान) से विस्थापित हिन्दू षरणार्थियों में से लाखों लोगों को बुक्सा आदिम जनजाति समूह के निवास क्षेत्र में किच्छा से लेकर रामनगर–काषीपुर के तराई क्षेत्र में बसाया गया।

इसके साथ ही भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के संघर्ष में अपना जीवन न्यौछावर करने वाले अमर षहीदों के वंषजों आश्रितों को भी पुरस्कार स्वरूप इस क्षत्र में बसाया गया। अमर षहीद सरदार भगत सिंह जी के वंषज इसी क्षेत्र में बुक्सा आदिम जनजाति लोगों के गाँव के बीच बन्नाखेड़ा सानी (बाजपुर तहसील) के पास आवासित किए गए। इस अवधि में विभाजित क्षेत्रों से आए वास्तविक षरणार्थियों के साथ ही पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेष, बिहार आदि के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, तत्कालीन भारतीय सरकारी सेवक, पूर्व सैन्य कर्मियों, अधिकारियों आदि को इस क्षेत्र में बसाया गया। यहाँ के स्थानीय समुदायों विषेषकर बुक्सा आदिम जनजाति के लोगों को सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक–व्यापारिक रूप से इन लोगों ने सबसे अधिक प्रभावित किया।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस काल में देष के अनेक भागों से यहाँ आकर बसने वाले लोगों विषेषकर पाकिस्तान–बांग्लादेष से विस्थापित होकर यहाँ आकर बसने वाले लोगों ने इस क्षेत्र के वन्य पर्यावरण को रूपान्तरित करके आधुनिक विकास की नींव डाली और क्षेत्र को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दी किन्तु कतिपय कारणों से इस क्षेत्र के सबसे प्राचीन निवासियों **''बुक्साः विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह''** (PVTG- Particularly Vulenerable Tribal Group) पर इनके प्रतिकूल प्रभावों को भी आसानी से पहचाना जा सकता है। खासकर भूमि संसाधनों को लेकर देष के अन्य जनजातीय क्षेत्रों व समूहों की भाँति बुक्सा जनजाति और गैर–जनजातीय लोगों के मध्य विवाद व कभी–कभी संघर्ष या मुकदमेबाजी की मुख्य वजह रही हैं।

4. **वर्तमान आप्रवास (2001 से अद्यतन)** – बुक्साड़ क्षेत्र की प्राकृतिक उर्वराषक्ति, षान्तिपूर्ण वातावरण, धरातलीय सुगमता, अच्छा अधो–भूजलस्तर, मौसम की अनुकूलता, प्रगतिवादी सोच, सौहार्दपूर्ण वातावरण आदि विविध विषेषताओं के कारण आज भी इस क्षेत्र में बाहर से आकर बसने वाले लोगों में विराम नहीं लगा है। निकटवर्ती अन्य क्षेत्रों के प्रतिकर्षक कारकों के कारण आज भी पर्वतीय क्षेत्रों, उत्तर प्रदेष के निकटवर्ती जिलों– बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत व अन्य दूरस्थ क्षेत्रों के लोग व सरकारी सेवारत कर्मचारी अपनी लम्बी सेवावधि के बाद इस क्षेत्र के गाँवों–कस्बों में स्थायी मकान बनाकर बस रहे हैं।

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

बुक्सा अनुसूचित जनजाति समूह पर आप्रवासियों का प्रभावः

बुक्सा अनुसूचित जनजाति के निवास क्षेत्र जिसे सामान्यतया ''बुक्साड़'' कहा जाता है में व स्वयं इस आदिम जनजाति पर विभिन्न समयों पर बाहर से आकर यहाँ बस जाने वाले लोगों का क्रान्तिकारी परिवर्तन व बहुआयामी प्रभाव खासकर 1947 से 1971 की अवधि के मध्य में आया जबकि भारत–पाक– बांग्लादेष विभाजन के कारण देष के सम्मुख उत्पन्न हुई करोड़ों षरणार्थियों को पुनर्वासित करने की समस्या उत्पन्न हुई। देष के विरल बसे भागों की भाँति तत्कालीन उत्तर प्रदेष के तराइ–भावर क्षेत्र जो कि बुक्सा आदिम जनजाति का स्वच्छन्द विचरण का क्षेत्र था बड़ी संख्या में पाक–बांग्लादेष से भारत आए षरणार्थियों को बसाया गया। आप्रवासियों की समस्या तब और गम्भीर हो गयी जब वास्तविक षरणार्थियों के साथ–साथ षेष उत्तर प्रदेष, बिहार, पंजाब, हरियाणा और उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, उनके आश्रित वंषजों और पूर्व सैनिकों को भी यहाँ लाकर बसाया गया। इस क्षेत्र की उर्वर भूमि, सम्पन्न व संरक्षित वन्य संसाधन भण्डारों को देखकर ये लोग न केवल यहाँ बड़ी संख्या में आकर बस गए वरन् इन लोगों ने अपने सगे–सम्बन्धियों को भी यहाँ बुलाकर अपने पास बसा लिया। इससे इस क्षेत्र की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई।

इसके साथ ही इस क्षेत्र के विकास के लिए सरकार ने विकासवादी सोच के कुछ पूर्व फौजी अधिकारियों, फौजियों और विभिन्न विभागों के सवानिवृत अधिकरियों को भी कृषि भूमि आवंटित करके बसाया। रूसी विकास माडल से प्रेरित होकर ऐसे एक गाँव का नाम ही **आदर्शनगर** रख कर वहाँ पर सरकार द्वारा आधुनिक स्कूल, अस्पताल, डाकघर, टेलीफोन सुविधा, पक्के मकान, कृषि उपकरण व उन्हें रखने के गैराज, दुधारू पष रखने के स्थान बनाकर दिए। इस गाँव में प्रत्येक परिवार को घर बनाने के लिए 2 एकड़ और खेती करने के लिए 15 एकड़ कृषि भूमि आवंटित की गयी। इसके साथ ही अध्ययन क्षेत्र में दो आधुनिक कृषि फार्म सैप्टा फार्म (गूलरभोज) और एस्कॉर्ट फार्म (कुण्डेष्वरी) में स्थापित किए गए। मानसूनी वर्षाकालीन बाढ़ और ग्रीष्मकालीन सूखे की समस्या से निपटने के लिए यहाँ की प्रमुख नदियों में मिट्टी के बाँध बनाकर जलाषय बनाए गए। गूलरभोज के पास भाखड़ा नदी पर हरिपुरा जलाषय और बौर नदी पर बौर जलाषय बनाए गए हैं। इन बाँधों में मानसूनी वर्षाकाल में जल को रोककर बाढ़ से क्षेत्र की रक्षा की जाती है और ग्रीष्मकाल में बनायी गयी सैंकड़ों किमी. लम्बी नहरों में जल छोड़कर सिंचाई की जाती है। इसके साथ ही इस जलाषय से मत्स्यन से भी सरकार को प्रतिवर्ष करोड़ों रूपए के राजस्व की प्राप्ति होती है। इन नहरा, लघु नहरों और गूलों–नालियों में जल प्रवाहित करके ऊधमसिंहनगर जनपद के साथ–साथ उत्तर प्रदेष के मुरादाबाद, रामपुर, बरेली और पीलीभीत जनपदों के कृषि क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर सिंचाई की जाती है। इसके साथ ही सरकार द्वारा कींचड़ व दलदलों, सदावाहिनी नदो, गराड़ों के लिए कुख्यात तराई के इन भागों में डामरयुक्त पक्की सड़कें, पुल आदि बनाए गए हैं। निकट ही हल्दी नामक स्थान के पास खुले वन क्षेत्र में भारत ही नहीं वरन् एषिया

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

का प्रथम और विष्वभर में विख्यात गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विष्वविद्यालय स्थापित किया गया है। देष में हरित क्रान्ति लाने में इस विष्वविद्यालय ने आधारभूत भूमिका निभायी है।

बुक्सा आदिम जनजाति समाज की पिछड़ी आर्थिक दषा, विषिष्ट जीवन षैली, कला व संस्कृति के आधार पर भारतीय संविधान के प्रावधानों की कसौटी पर जाँचते हुए भारत सरकार द्वारा सन् 1967 ई. में तत्कालीन उत्तर प्रदेष की पाँच जातियों– थारू, भोटिया, जौनसारी, राजी के साथ बुक्सा जाति के लोगों को भी अनुसूचित जनजाति की सूची में सम्मिलित किया गया। बौर नदी पर बनने बौर जलाषय और भाखड़ा नदी पर बने हरिपुरा जलाषय के निर्माण से बक्सा आदिम जनजाति के कुछ गाँव विस्थापित भी हुए जिनके निवासी आज तक सही ढंग से पुनर्वासित नहीं हो पाए हैं।

1967 ई. में अनुसूचित जनजाति और 1981 ई. में आदिम जनजाति समूह तथा 2008 में **''विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह''** (PVTG- Particularly Vulenerable Tribal Group) घोषित किए जाने पर बुक्सा जनजाति के षैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक विकास के लिए भारत सरकार व राज्य सरकार ने विभिन्न योजनाएं लागू कीं। षिक्षा के लिए आश्रम पद्धति विद्यालय, छात्रावास, प्रमुख गाँवों में प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय, छात्रवृत्ति की व्यवस्था, उद्यमिता व कौषल विकास प्रषिक्षण, देषाटन व पर्यटन, सहायता अनुदान आदि व अनेकानेक अन्य कल्याणकारी कार्यक्रम चलाकर बुक्सा लोगों के आर्थिक विकास के लिए सरकार द्वारा प्रयास किए गए। देष भर में अनुसूचित जनजातियों के विकासार्थ केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का लाभ बुक्सा आदिम जनजाति को पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। यद्यपि लापरवाही व तथाकथित भ्रष्टाचार, लालफीताषाही के कारण इन लोगों को अपेक्षित फायदा नहीं हो रहा है।

बुक्सा आदिम जनजाति के अषिक्षित बेरोजगार युवक–युवतियों के लिए उद्यतिमा व कौषल विकास प्रषिक्षण व स्वरोजगार हेतु अनुदान व रियायती दर पर ऋण, कृषि व अन्य उपयोग हेतु मषीनें, यन्त्र, उपकरण और खाद, बीज, कीटनाषक, खरपतवारनाषक आदि उपलब्ध कराए गए। इसके साथ ही पक्का मकान बनाने हेतु इन्दिरा आवास योजना, अटल आवास योजना, कृषि बागवानी, मछली पालन, मौन पालन, रेषम कीट पालन, कुटीर व गृह उद्योग की स्थापना हेतु तकनीकी व वित्तीय सहायता आदि प्रदान की गयीं। सड़क व खड़न्जा निर्माण, आर.सी.सी. मार्ग, पेयजल हेतु हैण्ड पम्प, व इण्डिया मार्का–2 नल, असिंचित कृषि भूमि पर आर्टीजन व नलकूप लगाए गए। सिंचाई हेतु पक्की नालियों का जाल बिछाया गया।

पाकिस्तान व बांग्लादेष से इस क्षेत्र में पहुँचे आप्रवासी षरणार्थियों ने विकास व विनाष दोनों की जीवन्त तस्वीरें देखी थीं। वे लोग अपेक्षाकृत विकसित व प्रगतिषील समाजों के अंग थे। विभाजन क संघर्ष में वे अपना सब कुछ खो चुके थे। अतः जब उन्हें दुबारा मौका मिला तो वे अपने भविष्य और अपनी भावी पीढ़ियों की खुषहाली और बेहतर जीवन के लिए अपने खेतों से अच्छी पैदावार लेने के लिए दिनोंदिन अधिकाधिक कृषि भूमि प्राप्त करने में लग गए। इन लोगों ने इस क्षेत्र में 10–20 से लेकर

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

100–100 एकड़ या उससे भी अधिक कृषि भूमि को अपने वैध या अवैध कब्जे में कर लिया। इसके साथ ही कुछ लोगों ने तो वन क्षेत्रों पर भी अतिक्रमण कर वहाँ से बहुमूल्य इमारती लकड़ी व अन्य वनोत्पादों की तस्करी करने में भी संकोच नहों किया।

ऐसी किवदंतियां हैं कि बुक्सा जनजाति के लोगों द्वारा छोड़े गए गाँवों में इन लोगों ने अपने घर और गाँव बसाए जहाँ पर कई प्रवासी लोगों को पूर्ववर्ती बुक्सा आदिम जनजाति लोगों द्वारा भूमि पर दबाए गए सोने–चाँदी के आभूषण और सिक्के मिले। कहा जाता है कि सामान्यतः सीधे व सरल स्वभाव के बुक्सा स्त्री–पुरूष बहुत मेहनती व ईमानदार होते थे। सैंकड़ों वर्षों व 30–35 पीढ़ियों तक अपने दुधारू पषुओं और अच्छी कृषि पैदावार के कारण अनेक बुक्सा परिवार काफी धनी थे। इन लोगों को सोने–चाँदी के सिक्के व तरह–तरह के आभूषण पहनने का बड़ा षौक था। पक्के मकान व आज जैसी अलमारी, तिजोरी, बैंक लॉकर आदि की सुविधा न होने के कारण बुक्सा लोग अपनी नकद धनराषि व आभूषणों को मिट्टी, पीतल व कांसे के बर्तनों में रखकर घर के किसी कोने में जमीन के नीचे गाड़ देते थे या फिर अनाज के कोठारों में अनाज के साथ रख देते थे। चोर–डाकुओं से सुरक्षा के कारण कई बार बुक्सा लोग अपने आभूषण अति गोपनीय ढंग से छिपा कर रखते थे। 20वीं षताब्दी के प्रारम्भ में बिजनौर के सुल्ताना डाकू के गिरोह का खौफ इस क्षेत्र में भो व्याप्त था। कई बार घर की वृद्ध महिला व पुरूष आभूषण व रूपए से भरे ऐसे बर्तनों को घर के सदस्यों से छिपा कर भी रखते थे। ऐसी दषा में अचानक व्यक्ति विषेष की मृत्यु हो जाने या बाढ़, सूखा, महामारी व अन्य आकस्मिक कारणों से परिवार द्वारा अचानक गाँव छाड़ने पर वह खजाना वहीं छिपा रह जाता था। कई दषकों व सैंकड़ों वर्षों बाद जब कोई स्थानीय परिवार या आप्रवासी वहाँ पुनः आकर बस जाते थे तो घर बनाते समय मिट्टी की खुदाई करते समय कई लोगों को ऐसे खजाने मिल जाते थे। प्रवासी लोगों के साथ–साथ कई बुक्सा परिवारों को भी ऐसे खजाने मिलने के किस्से क्षेत्र के समाज में प्रसिद्ध हैं।

आप्रवासी और बुक्सा लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों का विश्लेषण

आप्रवासियों और बुक्सा आदिम जनजाति लोगों के पारस्परिक सम्बन्धों को हम निम्नवत रख सकते हैं–

1- **सामाजिक सम्बन्ध**– बुक्सा आदिम जनजाति समाज के लोग मूलतः सनातन हिन्दू धर्मानुयायी हैं। भारत में इस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु मुस्लिम धर्मानुयायियों, धर्मगुरूओं और षासकों ने गैर–मुस्लिम लोगों को इस्लाम धर्म में धर्मान्तरित कराया तो उनके जबरन धर्मान्तरण से बचने के लिए हिन्दू धर्मानुयायी बुक्सा लोग अपने मूल निवास क्षेत्र ''राजपूताना'' से पलायित करके विषम परिस्थितियों में यहाँ पहुँचे। इसलिए बुक्साड़ क्षेत्र पर बाद में बाहर से आए प्रवासी लोगों से इनके सामाजिक सम्बन्ध बराबरी और सहानुभूति के हैं। चूँकि बुक्सा लोग इस क्षेत्र के सबसे पुराने बासिंदे हैं तथा तथाकथित निम्न कहा जाने वाला कोई भी कार्य नहीं करते हैं और समृद्ध हिन्दू मान्यताओं, परम्पराओं विष्वासों, देवी–देवताओं की उपासना करते हैं। 1967 ई. में अनुसूचित

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

जनजाति घोषित किए जाने के अलावा अन्य किसी भी प्रकार से पृथक या निम्न श्रेणी के नहीं माने जाते हैं। कोई भी समीपस्थ समाज इन्हें अस्पृष्य नहीं मानता है। स्वयं बुक्सा आदिम जनजाति समाज के लोग विभिन्न गोत्रों में बँटे हुए हैं जिनमें से कुछ स्वयं को अग्रवाल बनिया, मेहता बनिया, राजपूत, तोमर, राठौर, कनोजिया ब्राह्मण आदि मानते हैं। कुछ लोगों के गोत्र चौहान, अहीर व पूर्व निवास स्थान के अनुसार हैं, जैसे– सकतपुर, गुलजारपुर, भीकमपुरी, मदनापुर, पौलगड़, वरूआवाला, चनान आदि नामक ग्राम के आधार पर रखे गए हैं। मांसाहारी होने के बाद भी बुक्सा आदिम जनजाति समाज के व्यक्तिगत, पारिवारिक समारोहो, उत्सवों, मेले–त्यौहार, विवाह की दावत आदि तथा अन्य खुषी के अवसर पर आयोजित भोजों में आमन्त्रित सभी जाति–धर्म के लोग बड़े प्रेम व सम्मान से भोजन ग्रहण करते हैं।

2- **सम्बोधन** – बुक्सा आदिम जनजाति समाज के किसी गाँव के प्रमुख व्यक्ति, मुखिया या उस गाँव की नीव रखने वाले व्यक्ति को उस गाँव का पधान या प्रधान की पदवी या उपाधि से सम्बोधित किया जाता है। गाँव स्तरीय परम्परागत संगठन का यह सर्वप्रमुख व्यक्ति होता है। यह पद वंष परम्परागत होता है। इसमें उत्तराधिकार की जनजातीय व भारतीय पद्धति– प्रधान के सबसे बड़े पुत्र, पुत्राभाव में प्रधान के छोटे भाई या उसके बड़े पुत्र को प्रधान बनाया जाता है। गैर बुक्सा लोग चाहे वह इस क्षेत्र का मूल निवासी हो या बाद में किसी समय इस क्षेत्र में बाहर से आकर बस गया हो बुक्सा आदिम जनजाति के पुरूष को पधान या प्रधान और महिला को पधानी या प्रधानी जसे सम्मानसूचक सम्बोधन से सम्बोधित करते हैं। बुक्सा लोग सिर्फ गाँव के वास्तविक प्रधान को ही प्रधान या पधान षब्द से सम्बोधित करते हैं।

3. **वैवाहिक सम्बन्ध**– बुक्सा आदिम जनजाति समाज जाति व्यवस्था को नहीं मानता है। अध्ययन क्षेत्र में निवासरत समस्त बुक्सा परिवार एक ही जाति के सदस्य हैं। इनमें कोई उपजाति नहीं है। जाति के आधार पर इनमें किसी प्रकार का कोई भेद भाव या अन्तर नहीं पाया जाता है। ऊधमसिंहनगर जनपद का समस्त बुक्सा जनजाति समाज लगभग 55–60 गोत्रों में विभाजित है। ये लोग आपस में सगोत्रीय विवाह नहीं करते हैं। अन्य समीपस्थ सामान्य समाजों या निकटवर्ती क्षेत्रों– सितारगंज, खटीमा, पौड़ी गढ़वाल, हरिद्वार, देहरादून या उत्तर प्रदेष के बिजनौर जनपदों या अन्यत्र दूरस्थ स्थानों में रहने वाले थारू, भोटिया, जौनसारी या राजी आदि से भी इनके वैवाहिक सम्बन्ध नहीं पाए जाते हैं। इनमें एक सबसे बड़ी विषेषता यह पायी जाती है कि जाति व्यवस्था को न मानने के कारण इस समाज के कुछ वैवाहिक सम्बन्ध खटीमा व सितारगंज के थारू समाजों व निकटस्थ सामान्य व पर्वतीय समाजों से भी स्थापित हो गए हैं यद्यपि इनकी संख्या अंगुलियों में गिनी जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि वैवाहिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में इस आदिम जनजाति का दृष्टिकोण अधिक रूढ़िवादी या परम्परावादी नहीं है। प्रेम सम्बन्ध के कारण जहाँ बुक्सा आदिम जनजाति समाज की कई युवतियों ने अन्य समाजों के युवकों से विवाह कर लिया है

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

वहीं कई बुक्सा युवकों ने भी अन्य समाजों की युवतियों से विवाह कर लिए हैं। विभिन्न प्रकरणों में बदलते परिवेष व षिक्षा आदि के प्रभाव से बुक्साड़ क्षेत्र में दर्जनों युवक–युवतियों ने अन्य जातीय युवक–युवतियों के साथ घर से भाग कर गन्धर्व विवाह या कोर्ट मैरिज करके अपने घर बसा लिए हैं। ऐसे विवाह बुक्सा आदिम जनजाति समाज में समाज की मौन स्वीकृति प्राप्त कर चुके हैं।

बुक्सा आदिम जनजाति समाज के कुछ षिक्षित, सम्पन्न व सरकारी सेवारत युवकों ने अन्य समाज की युवतियों से उनके पारिवारिक जनों की सहमति से हिन्दू विधिरीति से विवाह भी कर लिया है। यद्यपि ऐसे विवाहों की संख्या भी अंगुलियों में गिनी जा सकती है। बुक्सा आदिम जनजाति की आर्थिक स्थिति कमजोर होने व अषिक्षित होने के कारण अन्य समाजों के लोग सामान्यतया न तो बुक्सा समाज की युवतियों से अपने पुत्रों का विवाह करते हैं और न ही अपने समाज की पुत्रियां सामान्यतया बुक्सा युवकों को देते हैं। पारिवारिक सहमति से कुछ बुक्सा युवक व युवतियों के विवाह सितारगंज व खटीमा क्षेत्र के निवासी थारू जनजाति के युवक–युवतियों से हिन्दू रीति–रिवाजों से सम्पन्न हुए हैं। झिझक के बाद भी इस क्षेत्र में थारू व बुक्सा समाज धीरे–धीरे आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु अन्य सामान्यजनों– पाकिस्तान–बांग्लादेष से इस क्षेत्र में आए षरणार्थियों, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के वंषजों, पर्वतीय समाजों, ठाकुर, बनिया, ब्राह्मण, खत्री, सिख, धर्मान्तरित इसाई, मुस्लिम व अन्य लोगों से बुक्सा लोगों के विवाह सम्बन्ध सामान्यतया नहीं हैं।

4. **साँस्कृतिक व धार्मिक–कर्मकाण्डीय सम्बन्ध**– मुस्लिम व ईसाई धर्म का छोड़कर हिन्दू, सिख व अन्य हिन्दू धर्मों के समकक्ष धर्मों के तीर्थों, पूजा–स्थलों में बुक्सा लोग स्वच्छन्द रूप से जाते हैं। स्वयं बुक्सा लोगों के धार्मिक व पूजा–स्थलों, देवी के स्थानों, मन्दिरों आदि में अन्य हिन्दू धर्मानुयायी श्रृद्धा के साथ आते हैं। बुक्साओं के मेला स्थलों– चैती देवी– काषीपुर, अटरिया देवी– रूद्रपुर, डल बाबा मन्दिर– बेरिया दौलत, महादेव मन्दिर– रामबाग और महादेव मन्दिर– झारखण्डी, मनीराम मन्दिर– रामनगर आदि सहित सभी बुक्सा जनजातीय मन्दिरों में क्षेत्र के सभी धर्मावलम्बी लोग पूजा–अर्चना करते हैं।

   इसके साथ ही बुक्सा लोग हिन्दू धर्मों में मान्य संस्कारों, व्रत, त्यौहार, उत्सव, कथा–भागवत, पंचांग, पूजा–पाठ आदि को बड़ी श्रृद्धा के साथ मनाते हैं। नवरात्र, माँ भगवती के जागरण, भजन–कीर्तन, रामायण पाठ, श्रीमदभागवत कथा, होली, दीवाली, दषहरा, रामलीला, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, गंगा दषहरा, गंगा स्नान आदि इनके प्रमुख त्यौहार व उत्सव हैं।

5. **आर्थिक–व्यापारिक सम्बन्ध**– आज जबकि बुक्सा जनजाति समाज के 60 से 70 प्रतिषत लोग गरीबी की रेखा से नीचे दयनीय स्थिति में खेतिहर मजदूर, अकुषल श्रमिक व दैनिक मजदूरी करके अपनी आजीविका कमा रहे हैं तथापि समीपवर्ती आप्रवासी लोगों व समाजों से इनके आर्थिक–व्यापारिक सम्बन्ध सौहार्द्रपूर्ण, मजबूत और विष्वसनीय बने हुए हैं। प्राचीन काल से ही

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

बुक्सा जनजाति समाज के लोगों की सभी प्रकार की उपज स्थानीय मण्डियों, आढ़तों, बाजारों में गैर–बुक्सा लोगों द्वारा निर्बाध रूप से खरीदे जाते रहे हैं। इन समस्त व्यापारिक प्रतिष्ठानों का संचालन प्रायः गैर–बुक्सा लोगों द्वारा किया जाता है। इसके साथ ही ये गैर–बुक्सा लोग अपने प्रतिष्ठानों व कारखानों में तैयार वस्तुएं व सेवाएं बिना किसी भेद–भाव के बुक्सा लोगों को बेचते हैं। सम्पन्न व विष्वसनीय बुक्सा किसानों, मजदूरों को ये लोग बिना किसी कानूनी लिखा–पढ़ी के बिना ब्याज या मामूली ब्याज दर पर नकद धन, खाद्य पदार्थ, घरेलू उपयोग की वस्तुएं, कृषि उपकरण, खाद, बीज, दवाईयां, कीटनाषक या उपलब्ध हर वस्तु अग्रिम या ऋण के रूप में प्रदान कर देते हैं। इसके साथ ही गैर–बुक्सा किसान इस समाज के किसानों की खेती योग्य भूमि पर ठेका, बँटाई, गिरवीं रखकर आदि तरीके से भी खेती करते हैं। कभी–कभी गैर–बुक्सा लोग भी अपनी खेती योग्य भूमि बुक्सा समाज के मेहनती किसानों को बँटाई, ठेका या गिरवीं दे देते हैं। कई बार बुक्सा व अन्य समाज के लोग मिलकर साझेदारी में खेती या अन्य करोबार भी कर लेते हैं। लोगों की नैतिकता में गिरावट, आधुनिक विकास, लोभ–लालच आदि के कारण कुछ गैर–बुक्सा लोगों ने बुक्सा आदिम जनजाति के लोगों के साथ धोखा–धड़ी, बेईमानी व कपट करके इनकी चल–अचल संपत्ति खासकर कृषि भूमि को अवैध रूप से कब्जाया भी है। किन्तु ऐसे प्रकरण 20–30 प्रतिषत बुक्सा परिवारों के साथ ही हुए हैं वह भी बेपरवाह, नषाखोर, कामचोर, मुफ्तखोर व अदूरदर्षी बुक्सा लोगों के साथ ही हुआ है। ऐसे बुक्सा लोगा ने परिवार व संभ्रान्त लोगों की जानकारी के बगैर गुपचुप तरीके से बिना हिसाब–किताब के लेन–देन किया है और लिए गए धन या वस्तु का लम्बे समय तक भुगतान नहीं किया। कितने ही बुक्सा परिवारों द्वारा गैर–बुक्सा लोगों से लिए गए मात्र 10–20 से 50–60 हजार नकद रूपयों या अन्य वस्तुओं–पषुओं की कीमत का हिसाब– किताब 8 से 10 बर्षों बाद करने पर 4 से 5 लाख रूपया तक चुकाया है वह भी नकद न देकर बहुमूल्य कृषि भूमि सौंप कर। सामान्यतः जागरूक व मेहनती बुक्सा लोगों के साथ इस तरह की धोखाधड़ी के मामले न के बराबर मिलते हैं। कभी–कभी सम्पन्न बुक्सा किसानों ने गैर–बुक्सा जाति के लोगों की भूमि को खरीदा भी है।

6. **राजनीतिक सम्बन्ध**– स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में लोकतन्त्र की स्थापना व समान मतदान षक्ति के कारण राजनेताओं व राजनीतिक दलों की एकमुष्त वोट बैंक की जरूरत की खातिर बुक्सा जनजाति समाज में खास दिलचस्पी रही। बुक्सा जनजाति समाज के लोग यद्यपि राजनीतिक रूप से कुछ खास जागरूक नहीं थे, किन्तु राजनीतिक दलों की दूरदर्षिता व राजनेताओं की जागरूकता के कारण विगत कई दषकों से विषेषकर श्री नारायण दत्त तिवारी जी के राजनीति में सक्रिय होने के समय से इस समाज के लोगों की राजनीति में कुछ सक्रिय भागीदारी रही है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी के साथ–साथ समय–समय पर

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

अन्य दलों में भी बुक्सा समाज के लोग सक्रिय रूप से सम्मिलित होते रहे हैं। वर्तमान दौर में बहुजन समाज पार्टी में भी कुछ बुक्सा लोगों खासकर युवाओं का रूझान काफी बढ़ा है।

उत्तर प्रदेष व उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमन्त्री, पूर्व केन्द्रीय केबिनेट मन्त्री और आन्ध्र प्रदेष के पूर्व राज्यपाल मा. नारायण दत्त तिवारी जी की बुक्सा आदिम जनजाति समाज के लोगों से खास निकटता सर्वविदित है। बुक्सा आदिम जनजाति समाज के सैंकड़ों युवाओं को बाजपुर और गदरपुर की स्थानीय सहकारी चीनी मिलों में सीजनल व स्थायी नौकरी दिलाने में श्री नारायण दत्त तिवारी जी द्वारा दिए गए सहयोग और प्रेरणा को कभी भुलाया नहीं जा सकता। अपने युवा काल में कितने ही बुक्सा परिवारों के यहाँ श्री तिवारी जी ने रात्रि विश्राम किया था। आज भी श्री तिवारी जी सैंकड़ों बुक्सा लोगों व उनके जीवन से जुड़ी घटनाओं को भली–भाँति जानते हैं और बुक्सा लोगों से मिलने पर अपने समकालीन लोगों का कु"ाल क्षेम पूछते हैं। पूर्व सांसद श्री के. सी. सिंह बाबा, श्री सत्येन्द्र चन्द्र गुड़िया, श्री बलराज पासी, वर्तमान सांसद श्री भगत सिंह कोष्यारी, वर्तमान विधायक श्री यषपाल आर्य जी, श्री अरविन्द पाण्डे आदि के साथ बुक्सा आदिम जनजाति के जागरूक कार्यकर्ता राजनीति में भी सक्रिय हैं। इसके अलावा पन्तनगर–गदरपुर विधान सभा के पूर्व विधायक श्री प्रेमानन्द महाजन (बसपा) के साथ भी युवाओं की एक टीम राजनीति में सक्रिय रही है। तीनों प्रमुख राष्ट्रीय दलों– कांग्रेस, भाजपा और बसपा ने बुक्सा आदिम जनजाति के लोगों को अपने जिला व विधान सभा स्तरीय संगठनों और समितियों में पद और प्रतिनिधित्व दे रखा है। राष्ट्रीय दलों के सन्दर्भ में इस समाज की पर्याप्त सक्रिय भागीदारी प्रतीत होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि बुक्सा अनुसूचित जनजाति **''विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह''** समाज के लोग अपने राजनीतिक अधिकारों व हितों के प्रति पर्याप्त जागरूक हैं। यहाँ यह भो उल्लेख करना समीचीन है कि आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था की मंहगे होते चुनाव प्रणाली/व्यवहार ने कई बुक्सा परिवारों को आर्थिक रूप से नुकसान भी पहुँचाया है। वैसे तो पूरे विष्व में सभी प्रकार की चुनाव व्यवस्थाएं काफी महंगी व विभाजनकारी साबित हुई हैं किन्तु बुक्सा आदिम जनजाति समाज को जिस उद्देष्य से भारतीय संविधान द्वारा संरक्षित किया गया था और जिन उद्देष्यों को लेकर इनके विकास की अनेक योजनाएं प्रारम्भ की गयीं थी उनको एकमात्र कारक सिर्फ पंचायती राज चुनावो के दुष्प्रभावों ने निष्प्रभावी कर दिया है। प्रत्येक पाँच वर्ष बाद सम्पन्न होने वाले पंचायती राज चुनावों– ग्राम पंचायत प्रधान, ग्राम सभा वार्ड सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य और जिला पंचायत सदस्य व इनके प्रमुखों के पदों को चुनने के लिए होने वाले निर्वाचन में ढीले होते सामाजिक बन्धनों व संगठनों के कारण बुक्सा आदिम जनजाति के अनेक लोग भी स्वप्रेरणा से या अन्य लोगों जिनमें आस–पास के सामान्य वर्गों के लोग भी षामिल हैं की सलाह या उकसावे से चुनाव में प्रतिभाग करते हैं। मतदाताओं का समर्थन व मत प्राप्त करने के लिए फिजा के अनुसार ये लोग भी अपनी क्षमता से

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

How to Cite:
Dr. Shyam Singh (Nov 2020). Evaluation of relations with neighboring societies of Buxa Scheduled Tribe (Specially Vulnerable Tribal Group) of Udhamsinghnagar district
***International Journal of Economic Perspectives*,14(1), 256-272**
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

अधिक धन खर्च कर देते हैं। हारने या जीतने के बाद इस धन की किसी भी रूप से भरपायी न होने के कारण खासकर बुक्सा आदिम जनजाति के लोग ऋणग्रस्तता के षिकार होकर अपनी चल–अचल सम्पत्ति से हाथ धो बैठते हैं। विगत दषकों में सम्पन्न ऐसे चुनावों व चुनाव प्रक्रिया मे सम्मिलित सैंकड़ों बुक्सा परिवार खेतिहर मजदूर बनकर रह गए हैं व कई पढ़े–लिखे नौजवान पढ़ाई छोड़कर बेरोजगार या निजी श्रमिक बन गए हैं। कहा जा सकता है कि पंचायती राज व्यवस्था समाज के लिए हर प्रकार से लाभकर होने बाद भी कुल मिलाकर राजनीतिक परिवेष भी बुक्सा आदिम जनजाति समाज को नुकसान ही पहुँचा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नेषफील्ड, जे0 सी0, 1865 : डिस्क्रिप्सन आफ दी मैनर्स, इण्डस्ट्रीज एण्ड रिलिजन आफ दी थारू एण्ड बुक्सा ट्राइब्स ऑफ अपर इण्डिया, रिब्यू वाल्यूम 3, कलकत्ता।
2. हसनैन, नदीम, 1990 : जनजातीय भारत, लखनऊ।
3. हसन, अमीर, 1979 : बुक्साज ऑफ तराई, दिल्ली।
4. षुक्ल, रामजीत, 1981 : उत्तर प्रदेष की बुक्सा जनजाति, संजय प्रकाषन, वाराणसी।
5. श्रीवास्तव, ए0 आर0 एन0, 1965 : उत्तर प्रदेष की जनजातियाँ, इलाहाबाद।
6. सिंह, आर0 एल0, 1992 : द तराई रीजन ऑफ उत्तर प्रदेष, इलाहाबाद।
7. पाण्डे, नित्यानन्द, 2000 : बुक्सा जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विष्लेषणात्मक अध्ययन, (अप्रकाषित षोध प्रबन्ध), देहरादून।
8. मजूदार, डी0 एन0, 1937 : ए ट्राइब इन ट्रांजिषनः ए स्टडी इन कल्चरल पैटर्नस्, दिल्ली।
9. नायडू, पी0 आर0, 2002 : भारत के आदिवासी– विकास की समस्याऐं, नई दिल्ली।
10. मौर्य, डी0 एस0, 2007 : सामाजिक भूगोल, इलाहाबाद।
11. रावत, महेन्द्र सिंह 2014 : उत्तराखण्ड– समग्र अध्ययन, एरिहन्त पब्लिकेषन्स (इण्डिया) लि. मेरठ।
12. नेगी, गिरधर एवं जोषी 2013 : हिमालय की तराई के प्रकृतिपुत्र– बुक्सा आदिम जनजाति का समग्र अध्ययन, मल्लिका बुक्स, दिल्ली।
13. ग्वाल, सी. एस. 2012 : जन प्रहरी, (स्मारिका) उत्तराखण्ड अनु. जनजाति कल्याण समिति, देहरादून द्वारा प्रकाषित।
14- H. R. Nevill : Gazetteer of Nainital, 1904, Govt. Press United Province, Allahabad
15. Hoebel, E. A. 1958 : Man in Primitive World, McGraw Hill, New York.

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: **Dr. Shyam Singh**
Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020

16. Tiwari, D. N. 1984 : Primitive Tribals of Madhya Pradesh, Home Deptt. Tribal Devlopment, New Delhi.

17. Mahapatro, P. C. 1987 : Economic Development of Tribal India, New Delhi.

Reports

Saklani, B. 2005 : Buksha: A primitive Tribal Group of Garhwal- A Baseline Survey, Sponsored by Ministry of Tribal Affairs, New Delhi.

2006 : Baseline Survey of Buksha & Raji Primitive Tribal Group in Nainital, Udhamsingh Nagar & Champawat Districts of Uttaranchal, Vol. I, II, & III. Sponsored by Uttaranchal Bahuddeshiya Vitt Ewam Vikas Nigam, Deharadun.

MTA : Ministry of Tribal Affairs, Annual Reports 2006-07, 2007-08, 2008-09, 2009-10, 2010-11, 2011-12

Websites : Wikipedia Encyclopedia. mta.gov.in, khushahali.org, uk.gov.in, usn.nic.in, censusofindia.com

© 2020 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

***Corresponding author*: Dr. Shyam Singh**

Submitted: 27 Aug 2020, Revised: 09 Sep 2020, Accepted: 12 Oct 2020, Published; 30 Nov 2020